मानसून के दौरान बुकानीर ऐंचोवी का उपतट प्रवास

श्वेत बेट्स भारत के दक्षिण पश्चिम तट के मुख्य वाणिज्यिक वेलापवर्ती मात्स्यिकी संपदाओं में एक है और सामान्यतया ये उपतट वेलापवर्ती जाति है। लेकिन बुकानीर ऐंचोवी *एंक्रसिकोलिना प्यूंक्टिफेर (स्टोलेफोरेस बुकानीरी)* समुद्री जाति है और ये दक्षिणपश्चिम मानसून (जून-सिंतबर) की अवधि में उपतट जल में प्रवास करती है। ट्यूना पकड के उचित चारा है।

विषिंजम में 94 जूलाई 19 से 22 तक उपतट में इनका प्रवास भारी मात्रा में देखा गया और पोत संपाश में इसका भारी अवतरण भी हुआ। उपर्युक्त चार दिनों में कुल श्वेत बेट पकड 222.7 टन थी जो पोत संपाश के ज़रिए पकडी गयी कुल मछली के 94.8% जिसमें *ई. प्यूंक्टिफेर* और *ई. डेविसी* क्रमश 83.6% और 11.2% थे।

इन दिनों मानसून बहुत ज़ोर दार था और जल का तापमान 24.5^{0}C से 22.5^{0}C हो गया।

ई.प्यूंक्टिफेर की कुल लंबाई 55-119 मि मी के बीच में थी। पकड में अधिकांश 100-109 मि मी लंबाई की मछली थी। मादा जाति के 71% और नर जाति के 95% अंडरिक्त जननग्रंथीवाले थें। इस जाति का अंडजनन काल दीर्घकालिक है और मानसून काल भी इस में शामिल हैं। संग्रहीत नमूने में 95.6% मछली का पेट खाली और बाकी आधा भरी हुई अवस्था में थे।

यद्यपि *ई. प्यूंक्टिफेर* के उपतट में प्रवास करनेवाले समूह को अंडजनन स्टॉक कहा जा सकता है तथापि यह देख गया है कि अधिकांश मछली अधिकतम आकार की थीं। अंडजननकाल दीर्ध होने के कारण मानसून के दौरान रिक्रूटमेन्ट रीति पर उपतट स्टॉक के शोषण के कोई बुरा प्रभाव नहीं होगा। विषिंजम में चलाये गये परीक्षण व्यक्त करता है कि इस जाति को पेन में तीन महीने तक रखी जा सकती है। मानसून के दौरान इन्हें दो तीन महीने तक पेन में रखकर, फिर लक्षद्वीप में टयूना केलिए जीवित चारा के रूप में उपयोग करने केलिए ले जा सकता है। इस पर परीक्षण करना अच्छा होगा।

पुतियप्पा में ऐंचोवी का अवतरण

रिपोर्टर

जी. गोपकुमार, आर. भास्करन आचारि और ए.के. वेलायुधन
सी एम एफ आर आइ विषिंजम अनुसंधान केन्द्र, विषिंजम, केरल